प्रातःक्लास ओम्शान्ति पिताश्री मधुबन 26-7-67

ओम्शान्ति। बच्चे बाप के सामने बैठे हैं। तो जानते हैं कि हमारा बेहद का बाप है। और हमको बेहद का सुख देने लिए श्री मत दे रहे हैं। उनको गाया ही जाता है रहमदिल, लिबरेटर। बहुत महिमा करते हैं। बाप का तो फर्ज ही बच्चों को मत देना। बेहद का बाप भी मत देते हैं। उंच ते उंच बाप है तो जरूर उनकी मत भी उंच ते उंच होगी। मत x देने वाली आत्मा है। अच्छा वा बुरा काम आत्मा ही करती है। इस समय दुनिया को मिलती है रावण मत। तुम बच्चों को मिलती है राम की मत। रावण की मत से बेरहम हो उल्टा कार्य करते हैं। बाप मत देते हैं अच्छा सुल्टा कार्य करो। सबसे अच्छा कार्य अपन पर रहम करो। तुम जानते हो हम आत्मा सतोप्रधान थी। बहुत सुख लेते थे। फिर रावण मत मिलने से तुम भ्रष्टाचारी तमोप्रधान बन गये हो। अब फिर बाप मत देते हैं कि एक तो बाप की याद चाहिए, अपने उपर रहम करो। यह मत देते हैं। बाप रहम नहीं करते बाप तो श्री मत देते हैं। ऐसे2 करो। अपन उपर आपे ही रहम करो। अपन को आत्मा समझो और अपने बाप पतित पावन को याद करो तो पावन बन जावेंगे। बाप राय देते हैं तुम पावन कैसे बनेंगे। बाप ही पतित को पावन बनाने वाला है। वह श्री मत देते हैं। अगर उनकी मत पर नहीं चलते हैं तो अपने उपर बेरहमी होती है। बाप श्रीमत देते हैं बच्चे टाइम वेस्ट न करो। यह पाठ पक्का कर लो। हम आत्मा हैं। शरीर निर्वाह अर्थ धंधा आद भी भल करो फिर भी टाइम निकाल युक्ति रचो। काम काज करते आत्मा की बुधि बाप के तरफ होनी चाहिए। जैसे आशुक-माशुक भी काम तो करते हैं ना। काम करते एक दो को याद करते रहते हैं। वह माशुक भी आशुक होता है, माशुक का। यहां ऐसे नहीं है। तुम भक्ति मार्ग में भी याद करते हो वो गाड फादर, हे पतित पावन। कौन याद करती है? आत्मा बाप को याद करेगा। समझते हैं हम आत्माओ का निवास स्थान शांतिधाम है। कई कहते हैं याद कैसे करें। आत्मा का, परमात्मा का रूप क्या है जो याद करें। क्योंकि भक्ति मार्ग में तो गायाजाता है परमात्मा नाम रूप से न्यारा है। परन्तु ऐसी बात है नहीं। आत्मा ही सब कुछ करती है। कहते भी हैं पुण्यात्मा, पापात्मा। कहते भी हैं भृकुटी के बीच आत्मा स्टार मिसल है। फिर यह क्यों कहते कि आत्मा क्या है। उनको हम देख नहीं सकते। वह तो है ही जानने की चीज। आत्मा को जाना जाता है। परम पिता परमात्मा को भी जाना जाता है। वह अति सूक्ष्म चीज है। फायर फ्लाय (जुगनु) से भी आत्मा महीन है। शरीर से कैसे निकल जाती है पता भी नहीं पड़ता। जानते तो हो ना आत्मा है। दिव्य-दृष्टि से साक्षात्कार हो सकती है। आत्मा का भी दीदार हुआ सो क्या। वह तो स्टार मिसल सूक्ष्म है। ऐसे ही समझो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। जैसे आत्मा है वैसे परमात्मा है। वह भी सोल है। परन्तु परमात्मा को कहा जाता है सुप्रीम सोल। वे जन्म मरण में नहीं आते। आत्मा को सुप्रीम तब कहा जाय जब प्युर बने। मुक्तिधाम में सबको प्युर होकर जाना है। फिर उन प्युर आत्माओं में भी नम्बरवार सबको पार्ट मिला हुआ है। हिरोइन का पार्ट जिनको मिला हुआ है उनको सुप्रीम कहेंगे। नम्बरवार है। कहेंगे सुप्रीम आत्माएं तो लक्ष्मी नारायण की हैं। भल प्युर सब बनते हैं फिर भी नम्बरवार पार्ट बजाते हैं। कोई महाराजा, कोई दासी, कोई प्रजा बनती है। नाटक में भी कोई कम वेतन वाले कोई बहुत वेतन वाले होते हैं। तुम भी एक्टर्स हो। जानते हो इतने सब देवी देवताएं नम्बरवार हैं। आत्माएं भी नम्बरवार हैं। तो उन्हों को मर्तबे भी नम्बरवार हैं। जो अच्छा पुरुषार्थ करेंगे उनको उंच आत्मा कहेंगे। उंच पुरुषार्थ करते हैं उंच पद पाने। तुमको स्मृति आई है हम ने 84 जन्म लिए। अभी बाप के पास जाना है। जितना हम याद करेंगे सतोप्रधान बनेंगे। बच्चों को यह खुशी भी है, फिकर भी है। सभी कहते हैं हम नर से नारायण विश्व का मालिक बनेंगे। फिर पुरुषार्थ करना पड़े। नम्बरवार ही पुरुषार्थ अनुसार पद पाते हैं। सभी को नम्बरवार पार्ट मिला हुआ है। यह ड्रामा बना हुआ है।

अभी बाप तुमको मत देते हैं वैसे भी करके बाप को याद करो। जिससे विकर्म विनाश हो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाओ। तमोप्रधान भी तुम बने हो, फिर सतोप्रधान भी तुमको बनना है। इस समय सब से जास्ती इनसालवेन्ट भारत है। यह खेल ही भारत पर है। बाकि वह तो सिर्फ धर्म स्थापन करने आते हैं। पुनर्जन्म लेते2 पिछाड़ी में सब तमोप्रधान बनते हैं। स्वर्ग के मालिक तुम बनते हो। जानते हो भारत बहुत उंच

देश था। अभी कितना गरीब है। गरीब को ही सब मदद देते हैं हर बात की। भीख मांगते ही रहते हैं। आगे तो बहुत अनाज यहां से जाता था। अभी गरीब बनो है तो फिर रिर्टन सर्विस हो रही है। जो ले गये हैं वह उधार मिल रही है। कृष्ण और क्रिश्चन्स रास एक हो है। क्रिश्चन्स ने ही भारत को हप किया था अब फिर ड्रामा अनुसार वह आपस में लड़ते हैं। मखन तुम बच्चों को मिल जाता है। ऐसे नहीं कि कृष्ण के मुख में मखन था। यह तो शास्त्रों में गपोड़े लिख दिया है। सारी दुनिया कृष्ण के हाथ में आती है। सारे विश्व का मालिक बनते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं। तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। तुम्हारे कदम2 में पदम हैं। सिर्फ एक लक्ष्मी नारायण का राज्य नहीं था। डिनायस्टी थी ना। यथा राजा रानी... सभी की पावों में पदम होती है। वहां तो अनगिनत पैसे होते हैं। पैसे के लिए कोई पाप आद नहीं करते। अथाह धन होता है। अलाउदीन का खेल दिखाते हैं ना। अला जो उदीन अर्थात देवी देवता धर्म स्थापन करते हैं। सेकण्ड में जीवन मुक्ति दे देते हैं। सेकण्ड में सा0 हो जाता है। कृष्ण से डांस करते थे। वह था भक्ति मार्ग। यहां भक्ति मार्ग की बात ही नहीं। तुम तो वैकुण्ठ में प्रेक्टीकल जाकर राज भाग करेंगे। भक्ति मार्ग में सिर्फ सा0 होता है। इस समय तुम बच्चों को एमआबजेक्ट का सा0 होता है। जानते हो हम यह बनेंगे। बच्चों को भूल जाता है इसलिए बैज दिया जाता है। अभी हम बेहद के बाप के बच्चे बने हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। यह तो घड़ी2 पक्का करना चाहिए। परन्तु माया अपोजिट में है। तो वह खुशी भी उड़ जाती है। बाप को याद करते रहेंगे तो नशा रहेगा बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। फिर माया भूलाये देती है। तो फिर कुछ न कुछ विकर्म हो जाता है। तुम बच्चों को स्मृति आई है हम ने 84 जन्म लिए हैं। और कोई 84 जन्म नहीं लेते। यह भी समझना है जितना हम याद करेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। और फिर आप समान भी बनाना है। प्रजा बनाते हैं। चैरिटी बिगेन्स एट होम तीर्थों पर भी पहले खुद जाते हैं फिर मित्र-संबंधियों आद को भी ले जाते हैं। तुम भी प्यार से सबको समझाओ। सभी नहीं समझेंगे। एक ही घर में बाप समझेगा तो बच्चा नहीं समझेगा। कितना भी मां-बाप बच्चे को कहेंगे पुरानी दुनिया से दिल न लगाओ फिर भी मानेंगे नहीं। तंग कर देते हैं। जो यहां के सेपलिंग होंगे वह ही फिर आकर समझेंगे। इस धर्म की स्थापना देखो कैसे होती है। और धर्म वालों की सेपलिंग नहीं लगती है। वह तो उपर से आते हैं। उनके फालोअर्स भी आते रहते हैं। यह तो स्थापना करते हैं। और फिर सबको पावन बनाये ले जाते हैं। इसलिए इनको सतगुरू लिबरेटर कहा जाता है। सच्चा गुरू एक ही है। उनको ही सतगुरू कहा जाता है। भारत को सत खण्ड भी वह बनाते हैं। रावण कूड़ खण्ड बना देते हैं। बाप के लिए भी झूठ। देवताओं के लिए भी झूठ कह देते हैं। जो कुछ कहेंगे झूठ। तब बाप कहते हैं हियर नो ईविल, टाक नो ईविल। इनको कहा जाता है वैश्यालय। सतयुग है शिवालय। मनुष्य समझते थोड़े ही हैं हम वैश्यालय में हैं। वह तो अपने मत पर ही चलते हैं। कितना लड़ना झगड़ना चलता रहता। बच्चे मां को, पति स्त्री को मारने देरी नहीं करते। एक दो को काटते रहते हैं। बच्चा देखता है बाप का बहुत धन है, देता नहीं है तो मारने देरी नहीं करते। कैसी गंदी दुनिया है। अभी तुम क्या बन रहे हो। यह तुम्हारी एमआबजेक्ट खड़ी है। तुम तो सिर्फ कहते थे हे पतित पावन आकर पावन बनाओ, ऐसे थोड़े ही कहते थे विश्व का मालिक बनाओ। गाड फादर तो हेवन स्थापन करते हैं तो हम हेवन में क्यों न होवें यह भी बुधि किसकी चलती नहीं। बाप समझाते हैं कल्प 2 हम तुमको स्वर्गवासी बनाते हैं। फिर रावण तुमको नर्कवासी बनाते हैं। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देने से भूल गये हैं। बाप कहते हैं तुम हेवन मालिक थे, फिर 84 चक्र लगाये अब हेल के मालिक बने हो। अभी फिर बाप तुमको हेवन का मालिक बनाते हैं। कहते हैं आत्मायें बच्चों बाप को याद करो। तो तम तमो प्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। तमो-प्रधान बनने में आधा कल्प लगा है। बिल्कुल सारा कल्प ही कहें। क्योंकि कला तो कम होती जाती है न इस समय कोई भी कला न है। कहते हैं मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं।... इनका अर्थ कितना

किलियर है। यहाँ फिर निर्गुण बालक की संस्था भी है। सभी बालकों में कोई गुण नहीं है। नहीं तो बालक को महात्मा से भी ऊंच उंच कहा जाता है। यह फिर कहते निर्गुण बालक। अरे यह तो बहुत गुणवान है। इनको विकारों का भी पता नहीं। महात्माओं को तो विकारों का पता रहता है। तो अक्षर भी कितनी रांग बोलते हैं। माया बिलकुल ही अनराईटियस बनाय देती है। बाप समझाते है तुम कितने विकारी बन्दर थे। एक दो पर काम कटारी चलाते थे। गीता पढ़ते हैं कहते भी हैं काम महाशत्रु है। यह आद मध्य अंत दुख देते हैं। फिर भी पवित्र बनने में कितने विघ्न डालते हैं। बच्चा शादी नहीं करता तो कितना बिगरते हैं। नाम बदनाम होता है। लोग हंसी उड़ाते हैं। तो मुर्ख ठहरे ना। बाप कहते हैं तुम बच्चों को श्रीमत पर चलना है। जो फूल बनने का न होंगा तो कांटा ही रह जावेंगा। फिर आवेंगे द्वापुर में। जबकि रावण का राज्य होंगा। कितना भी समझाओ कब नहीं मानेंगे। कहाँ बच्चे कहते हम शादी नहीं करेंगे तो माँ-बाप कितना अत्याचार करते हैं। बाप कहते हैं जब ज्ञान यज्ञ रचता हुं तो विघ्न पड़ते हैं। तीन पैर पृथ्वी की भी नहीं कोड़व देते। आसुरी सम्प्रदाय है ना। तुम हो दैवी सम्प्रदाय। तुम सिर्फ बाप की मत पर याद कर पवित्र बनते हो, और कोई नहीं। सिर्फ अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। वाकि पानी की गंगा वा तुम्हारे गुरु लोग कोई तुम्हारी सदगति नहीं करेंगे। वह भी पावात्मायें हैं। फिर भी हमको गाली देते हैं। जैसे तुम आत्मायें इस शरीर में अवतरते हो वैसे बाप भी अवतरते हैं। फिर कच्छ अवतार, मच्छ अवतार कैसे हो सकते। कितनी गाली देते हैं। कण2 में भगवान है। बाप कहते हैं मेरी और देवताओं की कितने ग्लानी की है। तब मुझे आना पड़ता है। आकर फिर से तुम बच्चों को वर्सा देता हूं। रावण सराप देती है। यह खेल है। जो श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो समझा जाता है इनकी तकदीर इतनी उंची नहीं है। तकदीर वाले सवेरे उठ याद करेंगे। बाबा से बातें करेंगे। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। खुशी का पारा भी चढ़ेंगा। जो पास विथ आनर्स होते हैं वह ही राजाई के लायक बन सकते हैं। सिर्फ एक लक्ष्मी नारायण नहीं राज्य करते हैं। डिनायसटी होती है। वह लोग तो लाखों वर्ष कह देते। कितनी मुर्खता है। कितनी तुच्छ बुधि बन गये हैं। अब बाप कहते हैं तुम कितना स्वच्छ बुधि ~~बनकर~~ बनते हो। इनको कहा जाता है सतसंग। वाकि सब है झूठी डुबोने वाली सतसंग। सतसंग एक ही होता है जो बाप सच्ची2 नालेज दे सच्च खण्ड का मालिक बनाते हैं। कल्प के संगम पर ही सत का संग मिलता है। स्वर्ग में कोई भी प्रकार का संग होता नहीं। सभी झूठ ही बताते हैं। नम्बरवन झूठ ईश्वर सर्वव्यापी कह बेरा गर्क कर देते हैं। ईश्वर बाप समझने से बेरा पार हो जाता है। अभी तुम हो ज्ञानी सैलवेशन आर्मी। तुम विश्व का बेड़ा पार करते हो। तुमको सैलवेज करनेवाला श्रीमत देने वाला बाप है। तुम्हारी महिमा बहुत भारी है। बाप की महिमा, भारत की महिमा अपरम अपार है। तुम ब्रह्माण्ड के भी, विश्व का भी मालिक बनते हो। मैं तो सिर्फ ब्रह्माण्ड का मालिक हूँ। पूजा भी तुम्हारी डबल होती है। मैं तो देवता बनता नहीं हूँ जो डबल पूजा हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते हैं। और खुशी में आए पुरुषार्थ करते हैं। पढ़ाई में फर्क कितना है। सतयुग में लक्ष्मी नारायण का राज्य चलता है। वहाँ वजीर होते नहीं। लक्ष्मी नारायण जिनको भगवान भगवती कहते वह फिर वजीर की राय लेंगे क्या। जब पतित राजाएं बनते हैं तब वजीर आद रखते हैं। अभी तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। अनराईटियस, अनलफूल, ईरिलीजियस राज्य। तुम बच्चों को इस पुरानी दुनिया से वैराग्य है। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। ज्ञान सिर्फ ज्ञानी बाप सिखलाते हैं। और कोई सिखलाये न सके। बाप ही पतित पावन सर्व का सदगति दाता है। वाकि मनुष्य तो मनुष्यों कोउ डुबोते हैं। अच्छा बाप दादा का मीठे2 बच्चों को याद प्यार गुड मार्निंग। मधुबन निवासियों की याद प्यार स्वीकार करना जी। अच्छा अब विदाई।